International Research Journal of Humanities, Language and Literature
ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 6.959 Volume 9, Issue 10, Oct 2022
Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

# औद्योगीकरण और समाज

(डॉ. योगमाया उपाध्याय)

औद्योगीकरण से तात्पर्य बड़े–बड़े उद्योगों के विकास तथा छोटे और कुटीर उद्योग धन्धों के स्थान पर बड़े पैमाने की मशीनों की व्यवस्था से हैं। औद्योगीकरण आर्थिक विकास की व्यापक प्रक्रिया का केवल अंग मात्र है जिनका उद्देश्य उत्पादन के साधनों की क्षमता में वृध्दि करके जनजीवन के स्तर को ऊंचा उठाना हैं। भारत में औद्योगीकरण का प्रारंभ सन् 1850 से माना जाता हैं। औद्योगिक समाजशास्त्र का उदय प्रथम विश्वयुध्द के उपरान्त बीसवीं सदी में तृतीय दशक के लगभग हुआ परन्तु उद्योग एवं समाजशास्त्र क्रमशः प्राचीन काल से ही संबंधित हैं। औद्योगिक समाजशास्त्र को सन् 1930 में मान्यता प्राप्त हुई। औद्योगिक समाजशास्त्र का सीधा संबंध प्रमुख रूप से उद्योग एवं औद्योगीकरण से हैं। औद्योगीकरण शब्द 'समाजशास्त्रीय सिध्दांत को जब वस्तुओं के वितरण एवं उत्पादन के साथ ही साथ उद्योग के विकास के आधार पर प्रभावित करता हैं तो वह औद्योगिक समाजशास्त्र के अध्ययन का आकर्षक बिन्दु हो जाता हैं।'

औद्योगिकरण समाज विज्ञान , औद्योगिकरण समाज का क्रमबध्द अध्ययन है तथा इसके ज्ञान की सहायता से औद्योगिक संबंधों की व्यवस्थित व्याख्या की जा सकती हैं। अरस्तु का यह कहना अक्षरशः सही हैं कि ''मनुष्य एक सामाजिक प्राणी हैं।'' समाज के बिना वह अपने अस्तित्व की रक्षा नहीं कर सकता समाजीकृत होना तो पूरी तरह असम्भव है। औद्योगिक समाज समाज का ही अभिन्न अंग है। औद्योगिक समाज में व्यवस्था , प्रगति और औद्योगिक समाज के व्यक्तियों के व्यक्तित्व के समुचित विकास के लिए औद्योगिक समाज विज्ञान की आवश्यकता से इंकार नही किया जा सकता हैं।

बीसवीं शताब्दी औद्योगिक और आणु युग की शताब्दी है विश्व में औद्योगिक क्रांति की धूम मची है। मानव समाज का अधिकांश औद्योगिक क्रांति के परिणामों से प्रभावित हैं। औद्योगिक समाज के बारे में व्यवस्थित और वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त होता हैं। आज का जीवन और समाज औद्योगिक जीवन की ओर निरन्तर अग्रसर होता जा रहा हैं। हम औद्योगिक क्रांति से अपने को दूर भी नहीं रख सकते साथ ही इसके प्रचार और प्रसार की अपेक्षा भी नहीं कर सकते आज मानव औद्योगिक समाज में रहने वाला प्राणी है इस दृष्टि से भी औद्योगिक समाज विज्ञान का महत्व हैं। औद्योगिक समाज की सबसे मौलिक विशेषता तीव्र परिवर्तन की गति हैं। परिवर्तन की यह गति विश्व में प्रायः सभी जगह कम या अधिक मात्रा में व्याप्त हैं। इस परिवर्तन के मूल में औद्योगिक आविष्कार हैं। औद्योगिक क्रांति के कारण सामाजिक संगठन को परिवर्तन होना आवश्यक हो जाता हैं। आज औद्योगिक जीवन में क्रांति में निरन्तर वृध्दि हो रही हैं और औद्योगिक समाजों का निमार्ण होता जा रहा हैं। औद्योगिक समाज विज्ञान की नई शाखा के जन्म में सहायता

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

की। औद्योगिक प्रवृत्तियों का परिणाम हैं।''एलटन मेयी'' को औद्योगिक समाजविज्ञान का पिता कहा जाता हैं।

औद्योगिक समाजविज्ञान की उत्पत्ति का मूल कारण आधुनिक उद्योगवाद हैं, बड़ी मशीनों की सहायता से उद्योगों के क्षेत्रों में जो क्रांति हुई, उसके कारण आधुनिक उद्योगवाद का जन्म हुआ। उद्योग मानव–जीवन के अभिन्न अंग हैं और इनका महत्व आदिकाल से लेकर निरंतर आधुनिक जीवन तक स्वीकार किया जाता रहा हैं। आधुनिक उद्योग वाद का प्रभाव समाज की संरचना पर पड़ा और इससे समाज की सभी संस्थाएं प्रभावित हुई और इन संस्थाओं में परिवर्तन की गति तीव्र हो गई। समाज की संरचना और संस्थाओं की कार्य प्रणाली को प्रभावित करती हैं।

औद्योगीकरण से उद्योग धंधों का विकास तथा विस्तार होता है। भारत में यह प्रक्रिया मुख्यतः 18 वीं शताब्दी में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के आगमन के साथ प्रारंभ हुई। आगे चलकर ब्रिटिश उद्योगपतियों के साथ–साथ भारतीय औद्योगिक घराने जैसे– टाटा , बिरला , बजाज आदि इस क्षेत्र में उतरे। जिससे भारत में औद्योगीकरण का मुख्य कारण सस्ते कच्चे माल तथा श्रम शक्ति एवं बड़े बाजाज की उपलब्धता हैं। औद्योगिकरण मात्र एक आर्थिक प्रक्रिया न होकर सामाजिक प्रक्रिया भी है। सामाजिक सांस्कृतिक प्रभाव हुए हैं जो निम्न हैं–

1. संयुक्त परिवार का विघटन तथा छोटे परिवारों की प्राथमिकता।
2. विशिष्ट ग्राम शक्ति का विस्तार।
3. धर्मनिरपेक्षता में वृध्दि।
4. सामाजिक गतिशीलता के अवसरों में वृध्दि।
5. अर्जित प्रस्थिति के महत्व में वृध्दि।
6. जाति व्यवस्था का कमजोर होना।
7. वृध्दि तथा अनुपादक जनसंख्या के रूप में महत्व।
8. महिलाओं का कार्यशील जनसंख्या के रूप में महत्व।
9. सावयवी समाज के रूप में परिवर्तन।
10. धर्म की प्रभाविक्ता में कमी।
11. जीवन की गुणवत्ता में वृध्दि।
12. अवैयक्तिक संबंधों में वृध्दि।

छत्तीसगढ़ राज्य देश के उन राज्यों में से एक है जहां के खनिज संपदा के साथ–साथ वनसंपदा एवं कृषि उत्पादकता से परिपूर्ण हैं। यहाँ के खनिज संपदा के चलते ही बड़े–बड़े उद्योगों की क्रांति जागृत हो चुकी है। छत्तीसगढ़ राज्य में वर्तमान में जारी औद्योगिक नीति 2009–14 में स्पष्ट रूप से प्रावधान किया गया है कि राज्य के 14 प्रतिशत वनाच्छित क्षेत्रों में मूल्यवान वनों का संरक्षण एवं लगभग 90 से अधिक प्रजाति को वन औषधि संरक्षित कर विपणन कृषि एवं आय के स्त्रोतों में वृध्दि करना हैं। वहीं राज्य को 2014 तक पावर हब के रूप में स्थापित करने हेतु 50 हजार मेगावट से अधिक विद्यृत उत्पादन की परियोजनाओं की गुणक्ता किया जाना हैं। छत्तीसगढ़ राज्य धान के कटोरे के नाम से भी जाना जाता हैं। यहाँ के हर नागरिकों को भोजन का अधिकार प्राप्त हैं अर्थात यहॉ का कोई भी व्यक्ति भूखा नहीं रह सकता। ऐसे सम्पन्न राज्य की कृषि व्यवस्था और प्रति एकड़/हेक्टेयर उत्पादन की क्षमता में हो रहे वृध्दि और संचित विस्तार से कृषि उत्पादकता में गुणवक्ता एवं राज्यों की आवश्यकताओं को पूर्ण करने में सफल रहें हैं।

छत्तीसगढ़ राज्य में औद्योगिक क्रांति जैसे सीमेंट उद्योग , इस्पात उद्योग , एल्युमिनियम उद्योग आदि उद्योगों के विस्तार से राज्य की अधोसंरचना को एवं रेल परिवहन के पी पी पी मॉडल में विस्तार से एक सुव्यवस्थित आर्थिक एवं सामाजिक समृध्दि की ओर बढ़ रहे इन औद्योगीकरण कृषि विस्तार वनौषधि , खनिज संपदा एवं युवा वर्ग में रोजगार के प्रति उत्साह

जागृत हुआ है और रोजगार के साथ–साथ वैश्विक संभावनाएँ एवं प्रतिस्पर्धा में राज्य में बढ़ती हुई मंहगाई पर भी नियंत्रण स्थापित किया हैं। यहां के औद्योगिकरण को किसी भी प्रकार से सामाजिक एवं आर्थिक रूप से नकारात्मक प्रभाव नहीं देखा गया है।

औद्योगीकरण ने मानव जीवन को एक अलग ही मुकाम पर लाकर खड़ा कर दिया है। अल्प समय में ही समाज को विभिन्न क्षेत्रों में विकास की ओर अग्रसर किया और आज समाज एक उन्नतशील समाज के रूप में सामने आया है।

औद्योगीकरण का सीधा प्रभाव समाज में लोगों के आर्थिक जीवन पर विशेष रूप से पड़ता हैं। रोजगार के क्षेत्रों में वृध्दि और पर्याप्त मात्रा में भौतिक सुख सुविधाएं उपलब्ध होना उद्योगीकरण की सबसे बड़ी विशेषताएँ हैं।

औद्योगीकरण ने नगरी के साथ–साथ ग्रामीण सामाजिक जीवन को भी प्रभावित किया। जिसके कारण परिवार की संरचना एवं प्रकार्यो में परिवर्तन आया कुटीर उद्योगो के ह्रास से संयुक्त परिवार एकाकी परिवार के रूप में विघटित होता गया जिसमें वृध्दों की स्थिति दयनीय होती गयी। एकाकी परिवार के कारण वृध्दों की सही देखभाल न हो पाना एवं परिवार के सदस्यों द्वारा उन्हे पर्याप्त समय न दे पाना भी वृध्दों की सामाजिक दशाओं को प्रभावित करता हैं।

औद्योगीकरण ने समाज पर सकारात्मक प्रभाव डाला वही दूसरी ओर इसके नकारात्मक प्रभाव से आज वृध्दों का जीवन संकट में पड़ता जा रहा हैं। कारखानों से निकलने वाली धुएं ऊंची आवाजे एवं प्रदूषित वातावरण ने वृध्दों के अनेक बिमारियों से ग्रषित कर दिया हैं। आर्थिक शारीरिक एवं मानसिक रूप से पीड़ित वृध्दों के लिए यह और एक समस्या बन चुकी है।

परिवार के सदस्यों द्वारा भावनात्मक सहयोग न मिल पाने के कारण वे हमेशा मानसिक तनाव में रहते है। आज मानसिक तनाव , अकेलापन एवं अवसाद से ग्रसित वृध्दजनों को समाज एवं परिवार से प्यार और सहानुभूति की आवश्यकता हैं।

**निष्कर्ष** :– औद्योगीकरण से उन्नति व प्रगति अवश्य हो रही है लेकिन इनके साथ–साथ सामाजिक संरचना व संस्कृति को प्रभावित कर रही हैं।

## संदर्भ


1. भार्गव प्रमोद – समाज कल्याण अनुपात में घटती औसत , मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार की पत्रिका जून 2018.
2. नवभारत ''दैनिक समाचार पत्र 28 दिसम्बर 2011.
3. हरिभूमि (सहेली) दैनिक समाचार पत्र जनवरी 2012.